DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-2,CONTRIBUTION OF HARVEY CARR IN CHICAGO SCHOOL
LECTURE-19

शिकागो स्कूल में हार्वे कार्र का योगदान:-

(CONTIBUTION OF HARVEY CARR IN CHICAGO SCHOOL)

हार्वे कार्र (HARVEY CARR,1873-1954)

हार्वे कार्र का जन्म 1873 में हुआ |इतिहासकारों ने प्रकार्यवादी मनोविज्ञान का उन्हें विकासकर्ता माना है क्योंकि उनके कार्याविधि में प्रकार्यवाद की लोकप्रियता अपने चरम सीमा पर पहुँच सकी |वे बैचलर तथा एम $_{o}$ए $_{o}$की उपाधि कोलोरेडो विश्वविद्यालय से प्राप्त किये |वे प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की शिक्षा हासिल करने के लिए शिकागो विश्वविद्यालय गये और 1905 में वे इसी विश्वविद्यालय से पी $_{o}$एच$_{o}$डी की उपाधि प्राप्त किये |जब 1921 में एंजिल ,शिकागो विश्वविद्यालय को छोड़कर येल विश्वविद्यालय चले गये तो उनकी नियुक्ति एंजिल के पद पर यानी मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष पद पर की गयी हालांकि दो साल तक इस नियुक्ति की औपचारिकता पूरी नहीं हो सकी थी |इस समय तक प्रकार्यवाद एक सबल स्कूल के रूप में पुर्णतः स्थापित हो चूका था |कार्र के प्रयासों से इस स्कूल की लोकप्रियता अपने चरम सीमा पर पहुँच गयी |1925 में उन्होंने एक पुस्तक साइकोलॉजी: ए स्टडी ऑफ़ मेंटल एक्टिविटी

प्रकाशित किया जो काफी लोकप्रिय हो सका |इस पुस्तक में उन्होंने प्रकार्यवाद को एक सम्पूर्ण एवं विकसित सम्प्रदाय के रूप मे प्रस्तुत किया है|

जिसका वर्णन निम्नलिखित है :-

एक सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद (functionalism as a system)

जैसा की ऊपर लिखा गया है की एक सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद शिकागो विश्वविद्यालय में उस समय अपनी लोकप्रियता के शिखर पर रहा जब कार्र मनोविज्ञान के अध्यक्ष थे |सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद के योगदान को कार्र के विचारधाराओं को आधार मानते है जिसका वर्णन उसकी पुस्तक psychology: 'A STUDY OF MENTAL ACTIVITY' में पर्याप्त है ,उसे निम्नांकित सात भागो में बाटकर प्रस्तुत किया जा सकता है :-

(i)मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु –

कार्र के अनुसार मनोविज्ञान मानसिक क्रिया या अनुकूली व्यवहार का अध्ययन करता है |अतः मनोविज्ञान में अनुकूली व्यवहार एक मुख्य संप्रत्यय है |इसमें प्रत्यक्षण ,स्मृति ,भाव ,निर्णय ,एवं इच्छा आदि प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती है |इन प्रक्रियाओं से व्यक्ति को वातावरण में समायोजन करने में मदद मिलती है |इस तरह से मनोविज्ञान का सम्बन्ध तत्वों या अंतर्वस्तु से न होकर प्रक्रियाओं से होता है |

कार्र का मत था की अनुकूली व्यवहार के तीन गुण होते है जो निम्नांकित है :-

(i)इस तरह के व्यवहार में एक अभिप्रेरण उद्दीपक होता है |

(ii)इस तरह के व्यवहार में एक संवेदी उद्दीपक होता है |

(iii)इस तरह की अनुक्रिया परिस्थिति को इस ढंग से परिवर्तित कर देती है की उससे अभिप्रेरण उद्दीपक की तुष्टि हो जाती है |

यदि कोई भूखा व्यक्ति होटल में जाकर भर पेट भोजन करता है ,तो उसका यह व्यवहार अनुकूली व्यवहार का उदाहरण है| इस उदाहरण में भूख एक अभिप्रेरण उद्दीपक है ,भोजन एक संवेदी उद्दीपक है तथा भोजन करना एक अनुकूली व्यवहार का उदाहरण है |उद्दीपक के रूप में अभिप्रेरण व्यक्ति के व्यवहार को तबतक प्रभावित करता जाता है जबतक की प्राणी के लिए वह उद्दीपक अधिक प्रभावी नहीं रह जाता है |इस तरह से अभिप्रेरण हमारी क्रियाओं को उत्पन्न करता है तथा निर्देशित करता है |कार्र ने तीन प्रविधियों का वर्णन किया है जिसके सहारे अनुकूली क्रिया द्वारा अभिप्रेरण उद्दीपक समाप्त हो जाता है

(i)पहला तरीका तो वह है जिसमे अनुकूली व्यवहार अभिप्रेरण को सीधे हटा सकने में समर्थ हो जाता है |जैसे – भोजन करने से भूख समाप्त हो जाती है |

(ii)दूसरा,अनुकूली व्यवहार के होने से अभिप्रेरण अपने आप अस्त व्यस्त हो जाता है क्योंकि इससे से और भी अधिक अभिप्रेरण उद्दीपक उत्पन्न हो जाते है |जैसे एक व्यक्ति जो कड़ी धुप में लकड़ी काटता है संभव है की थक कर वह लकड़ी काटना ही छोड़ दे |

(iii)अनुकूली व्यवहार के कुछ ऐसे संवेदी परिणाम होते है जिससे अभिप्रेरण अपने आप समाप्त हो जाते है |जैसे –किसी व्यक्ति का हाथ जब बर्तन से स्पर्श हो जाता है तो वह उसे हाथ से छोड़ देता है क्योंकि उसके अँगुलियों में जलन होने लगते है |

2. अभिगृहित –यद्दपि प्रकार्यवाद का कोई निश्चित अभिगृहित नही था ,मनोवैज्ञानिक

क्रियाओं के बारे में प्रकार्यवादियो ने कुछ पूर्वकल्पनाएँ कर रखी है |मार्क्स तथा क्रोनान –हिलिक्स (1987)के अनुसार ऐसी पूर्व कल्पनाएँ या अभिगृहित निम्नांकित है |

(i)सभी क्रियाओं की उत्पत्ति किसी-न-किसी संवेदी उद्दीपक से होता है |इन संवेदी उद्द्पको की अनुपस्थिति में कोई अनुक्रिया नहीं हो सकती है |

(ii)सभी संवेदी उद्दीपक से सिर्फ अभिप्रेरण ही नहीं बल्कि व्यवहार भी प्रभावित होते है |

(iii)प्रत्येक व्यवहार आतंरिक रूप से अनुकूली एवं उद्देश्य पूर्ण होता है |

(iv)व्यवहार एक सतत एवं समन्वित प्रक्रिया होती है और इससे उद्दीपक परिस्थिति में परिवर्तन होता है |

3.कार्य-प्रणाली विधि-कार्र ने मानसिक क्रियाओं के अध्ययन के लिए कई विधियो का प्रतिपादन किया है |वे संरचावादीओं के अन्तनिरिक्षण विधि को स्वीकार किया ,परन्तु उसके साथ-ही-साथ सामान्य प्रेक्षण को भी महत्वपूर्ण बतलाया |कार्र का मत था की प्रयोगात्मक विधि भी एक प्रमुख विधि है परन्तु साथ-साथ उन्होंने यह आशंका भी व्यक्त किया की मनुष्यों के साथ प्रयोग में यह विधि अधिक वैध नहीं हो सकता है क्योंकि मनुष्य की क्रियाओं पर नियंत्रण जो इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक है ,संभव नहीं है |

4. मन –शरीर समस्या –कार्र ने मन- शरीर समस्या की एक काफी सरल व्याख्या प्रस्तुत की है |उन्होंने मानसिक क्रिया को मनोदैहिक माना है |मानसिक क्रिया को इस अर्थ में मनोवैज्ञानिक या मानसिक माना जाता है क्योकि व्यक्ति को इस क्रिया को करने का पूरा आभास होता है |इस आभास के अभाव में वह उस वस्तु का प्रत्यक्षण चिन्तन आदि नही कर सकता है |एंजिल ने अपने शोध –पत्र में यह स्पष्ट किया था की मन तथा शरीर को एक –दूसरे से अलग नही किया जा सकता है तथा ये दोनों एक ही समष्टि में सन्निहित होते है |परन्तु कार्र के लिय मन –शरीर समस्या का उत्तम

समाधान द्वी –पहलूवाद ही था |निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि प्रकार्यवादी इस अर्थ मे द्वैतवादी थे कि वे अनुभुति के मानसिक एवं दैहिक दोनो पहलुओ कि पहचान कर रखे थे परन्तु वे संरचनावादियो के समान इन दोनो को एक –दुसरे से अलग करने के अर्थ में द्वैतवादी नही थे |

5 . आँकड़े का स्वरूप – प्रकार्यवाद में पर्यावरण का वातावरण के साथ प्राणियों के होने वाले अनुकूलन या समायोजन पर बल डालकर प्रकार्यवाद ने वस्तुनिष्ट आँकड़ो पर अधिक बल डाला है |लेकिन समय बीतने के साथ –ही साथ प्रकार्यवाद का अनुभव वस्तुनिष्ट आँकड़ो की ओर बढ़ता गया |

कार्र ने प्रत्यक्षण ,संवेग तथा चिन्तन को वस्तुनिष्ट ढंग से परिभाषित किया |किन्तु प्रत्यक्षण चिन्तन एवं संवेग में अंतर्निरीक्षणात्मक आँकड़ो को महत्वहीन समझा गया |

6.संबंध के नियम–प्रकार्यवादियों के लिए सम्बन्ध के नियमो का तात्पर्य सिखने के नियमो से था |शायद यही कारण है की प्रकार्यवादियों के शोध कार्यक्रम का यह केन्द्र बिंदु था |इस सिलसिले में कार्र ने साहचर्य के नियमों को महत्वपूर्ण बतलाया जिसे वे साहचर्यवादी परम्परा से ग्रहण किये थे |

7.चयन की प्रक्रिया –प्रकार्यवाद में कार्र द्वारा व्यवहार चयन के प्रक्रमो पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है | वे ध्यान ,अभिप्रेरण तथा सीखना को व्यवहार चयन के तीन प्रमुख एजेंट बतलाये है उनका मत था की ध्यान से प्रत्यक्षण में तीक्ष्णता आती है |कार्र ने सिखने को व्यवहार चयन का प्रमुख एजेंट माना है जो निम्नांकित तीन तरीको से संचालित होता है :-

(i)अनुभूति द्वारा कुछ अनुकूली प्रक्रम या साहचर्य को व्यक्ति सीखता है |

(ii)जैसे-जैसे साहचर्य या अनुकूली प्रक्रमों को व्यक्ति सीखता है ,उत्तेजन परिस्थिति के साथ पहले वे अनुक्रिया के साथ सम्बंधित हो जाता है तथा भविष्य में वे वही अनुक्रिया उत्पन्न कर सकने की क्षमता विकसित कर लेते है |

(iii)कुछ अनुकूली प्रक्रमों या साहचर्यों को सिख लिया जाता है क्योंकि वे सामाज द्वारा लागू किया जाता है |

अतः स्पष्ट हुआ की कार्र ने प्रकार्यवाद के मुख्य तत्वों को काफी स्पष्ट ढंग से उपस्थित किया है |सच्चाई यह है की उनके ही कार्यावधि में प्रकार्यवाद की लोकप्रियता अपनी पराकाष्ठा पर रही और शिकागो पहला अमेरिकन स्कूल था जिसने मनोविज्ञान के प्रयुक्त पहलु पर बल डाल कर मनोविज्ञान को आम लोगो के लिए उपयोगी सिद्ध किया |